**Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language**,
***Online ISSN 2348-3083, SJIF 2016 = 4.44, www.srjis.com***
*UGC Approved Sr. No.48612, AUG-SEPT 2017, VOL- 4/23*

# गौतम बुद्ध के दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता

**गुणवंत सोनोने, Ph. D.**

***gunwantsonone7@gmail.com***

***Abstract***

गौतम बुद्ध के विचार एवं सिद्धांतो की नींव 'दुःख' या 'शोषण' है | समता या साम्यवाद (समता) प्रस्थापित करने के लिए निजी संपत्ति का त्याग गौतम बुद्ध को मान्य है | शोषण रहित समाज का निर्माण करना गौतम बुद्ध का प्रधान उद्देश्य माना जाता है | गौतम बुद्ध को वर्ग- द्वंद्व की विद्यमानता मान्य है | दुःख या शोषण के विभिन्न कारणों में से भूक और गरीबी कारण माना है | गौतम बुद्ध लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था का पुरस्कार करते है | गौतम बुद्ध द्वारा प्रस्थापित प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि मूल्यं वर्तमान समय में भी वैश्विक शाश्वत मूल्य है | शोषण, जातीयता, आत्महत्या, बेरोजगारी, भुखमरी, हिंसा, आतंकवाद, युद्ध को पूर्णता समाप्त कर शाश्वत विश्व कल्याण के लिए बुद्ध का दर्शन ही उपयुक्त है | गौतम बुद्ध के मौलिक विचार वैश्विक एवं शाश्वत विकास के लिए वर्तमान समाज में आज भी प्रासंगिक है |

**सार शब्द :** विचार एवं सिद्धांतो की नींव, दुःख, शोषण, समता, हिंसा, शाश्वत वैश्विक मूल्यं, विश्व कल्याण, गौतम बुद्ध के दर्शन, वर्तमान प्रासंगिकता.....

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

**प्रस्तावना :**

मानव समाज में कूछ लोग सशक्त, बलशाली, धनवान एवं शातिर और कुछ लोग कमजोर, बलहीन एवं धनहीन होना यह प्राचीन से लेकर वर्तमान समाज का इतिहास है | बलवान वर्ग बलहीन वर्गोका शोषण, दोहन, उत्पीडन, अन्याय, अत्याचार करता है | शोषितों के जीवन से अज्ञान,

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

अंधविश्वास, पाखण्ड आदि को समाप्त करके प्रज्ञा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण निर्माण करना आवश्यक है | भगवान बुद्ध ने मानव समाज में अंतर्निहित अंधविश्वास, पाखण्ड, कर्मकाण्ड, अत्याचार एवं अन्याय समाप्त करने के लिए मध्यम मार्ग अपनाया |

आचार धर्म, दर्शन, शिक्षा, संस्कति, सम्पत्ती, सामजिक व्यवस्था आदि शोषण के विभिन्न आयामोंसे गौतम बुद्ध भली- भांति ज्ञात हुए | उन्होंने शोषण के विभिन्न आयामों की आलोचना एवं खण्डन किया | शोषणरहित समाज के निर्माण के लिए समस्त बौद्ध भिक्कुओं को 'बहुजन हिताय - बहुजन सुखाय' का आवाहन किया | जीवन में मध्यम मार्ग का अनुशीलन करने का उपदेश बुद्ध ने दिया | "भिक्कुओं ! मैंने मध्यम मार्ग खोज निकाला है, (जोंकी) आँख देने वाला, ज्ञान करने वाला.... शान्ति (देने) वाला | ... यह (मध्यम मार्ग) यही आर्य (= श्रेष्ठ) अष्टांगिक (=आठ अंगो वाला) मार्ग है, जैसे की ... ठीक दृष्टी (=दर्शन), ठीक संकल्प, ठीक वचन, ठीक कर्म, ठीक आजीविका, ठीक प्रयत्न, ठीक स्मृति और ठीक समाधी |" पंचशिल, अष्टांग मार्ग, निर्वाण का सिद्धांत, दस पारमिता का निर्वाह ही मानव कल्याण के लिए शाश्वत मार्ग है |

गौतम बुद्ध के विचारों से प्रेरणा लेकर हम शोषणरहित, वर्गविहीन, भेदभावविरहित समाज की निर्मिती कर सकते है | उक्त संदर्भ में गौतम बुद्ध के विचार वर्तमान काल में प्रासंगिक है |

**गौतम बुद्ध के दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता :**

**विचार एवं सिद्धांतो की नींव :**

गौतम बुद्ध ने 'शोषण' शब्द के अलावा 'दुःख' शब्द का प्रयोग किया है | अपने धर्म की नींव 'मानव के दुःख' पर रखी है | बौद्ध साहित्य में अनेक स्थानों पर 'दुःख' शब्द गरीबी के आशय से प्रयुक्त किया है | इस नीवं पर अधिष्ठित प्रथम उपदेश 'धम्मचक्र प्रवर्तन सूत्र' सारनाथ में अपने अनुयायी को दिया | गौतम बुद्ध के विचार एवं सिद्धांतो की नींव दुःख या शोषण है | कार्ल मार्क्स के जन्म के 2400 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने यह जीवन का वास्तविक कथन किया था | मानव के जीवन से

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

आज भी शोषण और दुःख खत्म नहीं हुआ है | वर्तमान समाज से मानव को शोषण एवं दुःख मुक्त करना हमारा प्रधान दाईत्व होना चाहिए |

**संपत्ति :**

गौतम बुद्ध के सिधान्तो के अनुसार भिक्कु कोई निजी संपत्ति नहीं रखेगा | भिक्कू संघ के लिए गौतम बुद्ध ने साम्यवादियोंसे अधिक कठिन नियम बनाये है | भिक्कुओंको केवल चीवर, संघाटी, अन्तर्वास, एक लुंगी (अंतर्वासक) के लिए बंधन, भिक्कापात्र, एक उस्तरा, सिलने के लिए सुई धागा, एक छन्नी आदि ८ चीजे रखने की इजाजत थी | समता या साम्यवाद प्रस्थापित करने के लिए निजी संपत्ति का त्याग गौतम बुद्ध को मान्य है | भारत की स्वाधीनता के उपरांत मिश्र अर्थव्यवस्था एवं नियोजन व्यवस्था को स्वीकृत किया था, जिसका उद्देश्य आर्थिक एवं सामाजिक असमानता नष्ट करके आर्थिक एवं सामाजिक समानता प्रस्थापित कराना था | विवश होकर हमें यह सत्य कहना पड़ता है की, हम आज भी इसमे सफल नहीं हो पाए है |

**सामाजिक शोषण :**

अमिर गरीबोंका शोषण कर उन्हें गुलाम बना देते है | यही गुलामी कष्ट, दुःख एवं गरीबी का कारण बनती है | गौतम बुद्धने जातिवाद एवं वर्णव्यवस्था को जड़ से उखाड़ने के लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष कर समान समाज का निर्माण किया | बौद्ध धर्म एवं भिक्खु संघ में प्रवेश हेतु सभी वर्गों (स्त्री-पुरुष, शुद्र, दास, भंगी, चांडाल, चोर-डाकू आदि) के लिए प्रवेश के लिए द्वार खोल दिए | शोषण रहित समाज के निर्माण के लिए जीवनभर उपदेश किया | संविधानिक कानून के तहत गुलाम बनाना अपराध माना गया है | संविधान की सहायता से सामाजिक शोषण को प्रतिबंधित किया गया है | समाज में रोजमर्हा घटित सामाजिक शोषण की घटनायें सामाजिक शोषण समाप्त नहीं हुआ है यही दर्शाती है | समाज को शोषण मुक्त करना हर देशवाशियों की जबाबदेही है |

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**शासन व्यवस्था :**

लोकतान्त्रिक व्यवस्था की तुलना में निरंकुश व्यवस्था में शोषण एवं उत्पीडन के ज्यादा आसार होते है| बहुजन समाज के हित, सुख एवं कल्याण के लिए लोकतान्त्रिक व्यवस्था उचित होने के कारण बुद्ध ने गणतंत्र व्यवस्था का स्वीकार किया | विश्व की प्रथम लोकशाही शासन प्रणाली भारत के शाक्य गणराज्य में विकसित हुई | बुद्ध ने भिक्खु संघ का निर्माण भी लोकतंत्रीय व्यवस्था पर किया | मताधिकार, बहुमत एवं निर्णय स्वातंत्र्य यह तत्कालीन भिक्खु संघ की विशेषता रही है | समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि मूल्यों पर अधिष्ठित शोषण रहित समाज की स्थापना करना बुद्ध दर्शन का मूलाधार है | समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि मूल्यों पर अधिष्ठित शोषण रहित समाज की स्थापना करना वर्तमान काल की प्रासंगिकता है | विश्व के अधिकतर देशों ने लोकशाही शासनव्यवस्था का स्वीकार किया है | आज हमें लोकशाही मूल्यों को जीवन मूल्य के स्तर पर स्वीकृत करना अनिवार्य है |

**शाश्वत वैश्विक मूल्य :**

गौतम बुद्ध का दर्शन प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि विश्व कल्याणमय मूल्यों पर आधिष्ठित है | सामाजिक एवं आर्थिक शोषण के लिए बुद्ध इन्ही वैश्विक मूल्यों के अनुशीलन का आग्रह करते है | सम्राट प्रसेनजित, सम्राट अशोक, सम्राट हर्षवर्धन आदि ने समाज कल्याण हेतु उपरोक्त तत्वों का अनुपालन किया | गौतम बुद्ध द्वारा प्रस्थापित प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा आदि मूल्यं वर्तमान समय में भी वैश्विक शाश्वत मूल्य है |

**भूक और गरीबी :**

गौतम बुद्ध के अनुभव के अनुसार, भूक और गरीबी सबसे खतरनाक रोग है , जिससे समाज में शोषण एवं उत्पीडन पैदा होते है | इस सन्दर्भ में संत कबीर कहते है |

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**"न कुछ देखा भाव - भाजन में, न कुछ देखा पोथी में |**

**कहें कबीर सुनो भाई सन्तों, जो देखा सो रोटी में |"**

आज के वर्तमान समाज को गरीबी मुक्त बनाना हम सभी का दाईत्व है | भारत भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने गरीबी मुक्त भारत का स्वप्न देखा था , लेकिन आज तक पूरा नहीं हुआ है | विभिन्न राष्ट्रों की सरकार गरीबी हटाने के प्रयासरत है | इस दिशा में गौतम बुद्ध के विचार वर्तमान समय में प्रासंगिक है |

**मार्ग या साधन :**

गौतम बुद्धने नैतिक शिक्षा, प्रेम, स्नेह का मार्ग बतलाया है | बुद्ध हिंसा की कोई परिस्थिति में अनुमति नहीं देते | दुःख के अंत के लिए बुद्ध ने पंचशिल का पाठ पढाया है | मनुष्य-मनुष्य के प्रति असमानताओं को दूर करने के लिए बुद्ध ने अष्टांग मार्ग बताया है | निर्वाण का सिद्धांत, दस पारमिता का निर्वाह ही मनुष्य के दुःख को मिटाता है | नैतिक शिक्षा यह वर्तमान समय में प्रभावी एवं महत्वपूर्ण मार्ग या साधन सिद्ध हुआ है |

**वर्ग द्वंद्व या वर्ग- संघर्ष :**

गौतम बुद्ध और कौशल नरेश प्रसेनजित के बिच के वार्तालाप के अनुसार, राजाओं, कुलीनं - पुरुषों, ब्राह्मणों, गृहस्थों, माँ-बेटे, पिता-पुत्र, भाई-बहन, मित्र-मित्र के सदैव द्वंद्व का होना गौतम बुद्ध ने मान्य किया है | गौतम बुद्ध का अष्टांग मार्ग का सिद्धांत के अनुसार वर्ग-द्वंद्व विद्यमान है और वर्ग-द्वंद्व ही दुःख का कारण है | वर्ग-द्वंद्व के विनाश के लिए गौतम बुद्ध ने पंचशिल, अष्टांग मार्ग, दस पारमिता का अनुशीलन करने का उपदेश दिया है | गौतम बुद्ध को वर्ग-द्वंद्व की विद्यमानता मान्य थी | वर्ग- वर्ग संघर्ष एवं शोषक- शोषित संघर्ष को समाप्त करने के लिए शांति का प्रयोग करना आज के वर्तमान समय में उचित एवं प्रासंगिक है |

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**उपसंहार :**

विश्व में गौतम बुद्ध का नाम सन्मान से लिया जाता है | गौतम बुद्ध ने सुशिक्षा (धम्म) में सभी वर्गों को शिक्षा का समान अवसर दिया | शिक्षा का सभी वर्गोंको समान अवसर प्रदान करनेवाला सृष्टि का पहला महामानव गौतम बुद्ध है | बुद्ध ने वर्णव्यवस्था, वर्णाश्रम धर्म, जातिभेद की कटु आलोचना की है | उनके अनुसार सभी मानवोंको वर्ग, वर्ण, जातियों में विभाजित न कर समान भावसे देखना चाहिए | वर्णव्यवस्था, वर्णाश्रम, जातिभेद आदि का विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक तार्किक खंडन करनेवाला विश्व में बुद्ध के आलावा कोई धर्मगुरु, धर्म संस्थापक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजशास्त्री, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ नहीं हुवा|

शोषण एवं दुःख मुक्त समाज का निर्माण कराना, आर्थिक एवं सामाजिक समानता प्रस्थापित कराना, समाज को शोषण मुक्त कराना, भूक एवं गरीबी मुक्त समाज का निर्माण करना आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लोकशाही मूल्यों को जीवन मूल्य के स्तर पर स्वीकृत करना, प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता आदि विश्व कल्याणमय मू ल्योंको वर्त्तमान समय में वैश्विक शाश्वत मूल्य बनाना, वर्ग- वर्ग संघर्ष एवं शोषक- शोषित संघर्ष को समाप्त करने के लिए हिंसा का प्रयोग न करना, नैतिक शिक्षा का मार्ग या साधन के रुप में प्रभावी ढंग से उपयोग करना उचित होगा |

बाबासाहब डा. बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार, "साम्यवादी जीवनशैली की तुलना में बौद्ध जीवन शैली बेहतर है |", "बौद्ध दर्शन साम्यवाद से बेहतर विकल्प है |", "बुद्धिझम एवं कम्युनिझम दोनों पद्धतियोंकी तुलना करने पर बौद्ध पद्धति ज्यादा सुरक्षित और मजबूत दिखी |", "दुःख और दुःख का निवारण बौद्ध धम्म के माध्यम से बेहतर ढंग से ही हो सकता है |"

सामाजिक एवं आर्थिक शोषण, उत्पीडन, अन्याय एवं अत्याचार को समाप्त करने के लिए गौतम बुद्ध प्रज्ञा, शिल, करुणा, मैत्री, अहिंसा, दान आदि विश्व कल्याणमय मूल्यों के अनुशीलन की

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

बात प्रमुखता से रखता है | शोषण, जातीयता, आत्महत्या, बेरोजगारी, भुखमरी, हिंसा, आतंकवाद, युद्ध को पूर्णता समाप्त कर शाश्वत विश्व कल्याण के लिए बुद्ध का दर्शन ही उपयुक्त एवं वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है |

|| **भवतु सब्ब मंगलं** ||

**सन्दर्भ :**

अम्बेडकर, बी. आर., शीलप्रिय बौद्ध (अनुवादक), (2010) , "बुद्ध और कार्ल मार्क्स", दिल्ली, सम्यक प्रकाशन |

अज्ञात, सुरेन्द्र, (2013), "बुद्धधम्म, बुद्धिवाद व अम्बेडकर ", जयपुर, समता साहित्य सदन |

जाटव, डी. आर., (2015), "डॉ.अम्बेडकर और मार्क्सवाद", जयपुर, समता साहित्य सदन |

जाटव, डी. आर., (2003), "भगवान बुद्ध और कार्ल मार्क्स", जयपुर, समता साहित्य सदन |

जाटव, डी. आर., (2015), "बुद्ध और बौद्ध धर्म-दर्शन", जयपुर, समता साहित्य सदन |

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*